संपादक के नाम पत्र

शंकर शरण पूर्णिया

अमेरिका के नए राष्ट्रपति के बारे में जानकारी अच्छी लगी। बाराक ओबामा से पूरी दुनिया को नई राह दिखाने की उम्मीद है। ऐसे समय जब संपूर्ण दुनिया आतंकवाद और आर्थिक संकट से दो-चार हो रही है, ओबामा की जीत ने नया हौसला पैदा किया है। नए राष्ट्रपति को शुभकामनाएं देने के साथ ही हमें यह विश्वास भी है कि वे अमेरिका को नए सिरे से ऐसा नेतृत्व प्रदान करेंगे जिसके बारे में किसी तरह का अविश्वास न रहे। वह वाकई अमेरिका को नए भविष्य की ओर ले जाने की क्षमता रखते हैं।

महेश कुमार जैन बडौत

अमेरिका के नवनिर्वाचित राष्ट्रपति के बारे में विस्तृत जानकारी के लिए धन्यवाद। विभिन्न लेखों को पढ़कर नए राष्ट्रपति की प्राथमिकताओं के बारे में पता चला। सैर-सपाटे के तहत पैंसिल्वैनिया के बारे में भी जानकारी अच्छी लगी। बच्चों में कॉमिक्स के प्रति बढ़ते रुझान और वे इससे कैसे प्रेरित हो रहे हैं, यह जानना भी दिलचस्प रहा।

अशोक गुप्ता जयपुर

स्पैन के नवंबर-दिसंबर के अंक में प्रकाशित लेख ''नए राष्ट्रपति की नीतियों पर हैं निगाहें'' पसंद आया। बाराक ओबामा की नीतियों से ही तय होगा कि दुनिया में आने वाला दशक किस तरह का होता है। ओबामा ने अपने चुनाव प्रचार के दौरान जो कुछ कहा है, उससे मानवता के लिए उम्मीद बनती है। वह पूरी दुनिया को बांटने के बजाय जोड़ने की राह पर ले जाने की क्षमता रखते हैं। ओबामा के रूप में दुनिया को एक नई उम्मीद मिली है और सभी पक्षों को इस मौके को अपने हाथ से गंवाना नहीं चाहिए और उन्हें अपना पूरा समर्थन देना चाहिए।

सुशील सिंह, ग्वालियर

स्पैन के नवंबर-दिसंबर अंक में प्रकाशित लेख ''शुरू कीजिए अपनी हाइटेक कंपनी'' बेहद पसंद आया। इससे पता चलता है कि युवा अगर अपना दिमाग हमारे समुदायों की समस्याओं को हल करने में लगाएं तो हम सुनहरे भविष्य की ओर अग्रसर हो सकते हैं। अमेरिका और भारत जिस साझा लोकतंत्र के हिस्से हैं, उसकी प्रगति के लिए ज़रूरी है कि युवा बिना किसी पूर्वाग्रह के दुनिया को देखें और आने वाली पीढ़ियों के लिए काम करें। बेन कैस्नोचा की पहल भारत में भी युवाओं को कुछ नया कर गुजरने के लिए प्रेरित करेगी। स्पैन से इसी तरह के प्रेरणास्पद लेखों की हमेशा प्रतीक्षा रहती है।

मनीषा गुप्ता नई दिल्ली

पर्यावरण को लाभ पहुंचाने वाली ज़िपकार सेवा के बारे में बर्टन बोलाग का लेख पढ़ा। विश्व की जलवायु चुनौतियों से निपटने के लिए इस तरह की नई सोच और पेटेंट योग्य आइडिया समय की मांग है। रॉबिन चेज़ और अंतजे डेनियल्सन जैसे लोगों की हर देश में ज़रूरत है।

ज़िपकार सेवा का मॉडल बहुत ही व्यावहारिक, आरामदेय, पर्यावरण अनुकूल है और इससे यातायात जाम, प्रदूषण, कार्बन उत्सर्जन, पार्किंग की घटती जगह, बढ़ते पार्किंग शुल्क और ऊर्जा एवं ईंधन संकट जैसी कई समस्याओं से छुटकारा मिल सकता है। ये सभी जलवायु परिवर्तन के मोर्चे पर नकारात्मक प्रभाव छोड़ते हैं।

उम्मीद करते हैं कि भारत में भी कोई इससे सबक लेकर ऐसी ही पहल करेगा जहां इसकी तत्काल ज़रूरत है।

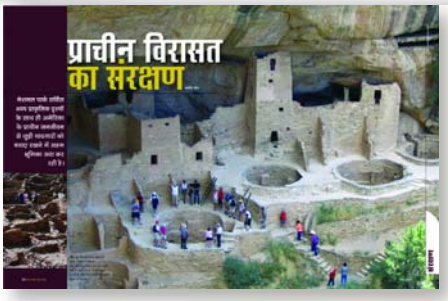

कुसुम जिंदल नई दिल्ली

सितंबर-अक्टूबर अंक में प्राचीन विरासत की संरक्षण के बार में जानकारी मिली। अमेरिकी अपनी विरासत को बचाए रखने के लिए जो कदम उठा रहे हैं, वे प्रशंसनीय हैं। भारत में भी हर ओर प्राचीन विरासत के दर्शन होते हैं लेकिन इसको बचाए रखने के लिए उठाए जा रहे कदम पर्याप्त नहीं हैं। प्राचीन विरासत के संरक्षण के लिए दोनों देशों को मिलकर कदम उठाने चाहिए। एक-दूसरे के अनुभवों से लाभ उठाकर नई तकनीक को अपनाना चाहिए।

अनिल पालीवाल लखनऊ

''थैंक्सगिविंग पर शाकाहारी दावत'' लेख पढ़ा। यह लेख इस बात को सिद्ध तय करता है कि यदि इच्छा हो तो हम किसी उत्सव या परिपाटी को अपने मुताबिक ढाल सकते हैं। अमेरिका में शाकाहारी लोगों की संख्या अब अच्छी-खासी है, ऐसे लोग देश की परंपरा के साथ चलें और पर्वों और उत्सवों का आनंद ले पाएं, इसके लिए ऐसे कदम बहुत ही सराहनीय हैं। विविधताओं से भरी इस दुनिया में किसी भी उत्सव का आनंद लेने के लिए एक ही तरीके तक सीमित क्यों रहा जाएं।